अंतरा-शब्दशक्ति

मेरी विरासत

कथा संग्रह

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'

मेरी विरासत

(कथा संग्रह)

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-75-9

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Meri Virasat By Ritu Thapliyal 'Sudevastu'

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

आभार

सर्वप्रथम अंतरा-शब्दशक्ति का धन्यवाद देना चाहूंगी, जिन्होने महिलाओं को लेखन के क्षेत्र में प्रोत्साहित करते हुए यह सवर्णिम मंच प्रदान किया।इस सुअवसर के माध्यम से मेरे शब्द लिपिबद्ध हो सके और मेरा पहला कहानी संग्रह **'मेरी विरासत'** के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। मूलतः मैं उत्तराखंड की निवासी हूँ। अपने व्यवसाय के कारण देश के कई राज्यों का भ्रमण कर चुकी हूँ। भ्रमण के दौरान मैंने इस बात का अध्ययन किया की भले ही हमारी राज्य सीमाएँ अलग हो जाए परंतु हम एक जैसी विचारधारा को और भावों को प्रवाहित करते है। चाहे वो समर्थन की हो या विरोध की।हमारा जीवन स्वयं किसी इतिहास से कम नहीं होता है। जीवन में घटने वाली घटनाएँ कब आपके लिए प्रेरणा बन जाये इसका ज्ञान हमें नहीं होता है।जीवन में अनेक रंग और रस का समावेश होता है उसी प्रकार मेरी इस पुस्तक में विभिन्न रंग व रस का समावेश है। मेरी इस पुस्तक में मैंने अपने आस-पास ही घटित हो रही घटनाओं को और अपने जीवन से जुड़ी घटना को लिपिबद्ध किया है।

'मेरी विरासत' कहानी संग्रह में जहां मेरी जीवन की प्रेरणा का वर्णन है (तू मेरी विरासत) वही स्त्री की व्यथा व अन्तर्मन की उथल-पुथल, अपने अस्तित्व के लिए स्वयं से युद्ध का चित्र उकेरा गया है (वेलेंटाइन, प्रयास के लिए, खुशियों की दुनिया) वही समाज में सम्बन्धों में आ रहे नए बदलाव जो समाज की बेड़ियों को तोड़ते हुए आगे के पथ पर अग्रसर हैं (मुझे मंजूर है) क्योंकि आज समाज को नव चेतना और नव विचारों की आवश्यकता है। इसी समाज की विचारधारा में हो रहे परिवर्तन और एक नवीन समाज की कल्पना का भी चित्रण कहानी में किया गया है। हमे जीवन का हर पल जीने का प्रयास करना चाहिए।

'मेरी विरासत' में लेखन में भाषा का सरल व सहज रूप प्रस्तुत प्रयास किया गया है, ताकि आम पाठक भी सहजता से शब्दों का अनुमान

लगा, कथा के गूढ़ रहस्यों को समझने में समर्थ हो और स्वयं एक वैचारिक निष्कर्ष तक पहुँच सके। आशा है मेरा प्रथम कहानी संग्रह 'मेरी विरासत' पाठको के बीच अपनी छाप छोडने में सफल होगा। यदि कोई त्रुटि रह जाए तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'
देहरादून, उत्तराखंड

कहानियाँ

1.	तू मेरी विरासत है	5-8
2.	वैलेंटाइन	9-13
3.	प्रयास के लिए	14-18
4.	खुशियों की दुनिया	19-24
5.	मुझे मंजूर है	25-32

तू मेरी विरासत है

यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं है, न ही समाज में घटित कोई घटना जिससे मुझे प्रेरणा मिली हो। मेरी प्रेरणा की वजह मेरे जीवन की वो घटना है जिसमे मेरी माँ ने मुझे बेटी होने के राज को बताया।यह वो सच्चाई है जो मुझे विरासत में मिली।जिसके कारण मैं हर जन्म में बेटी ही बनना चाहती हूँ।

बात 2007 की अचानक माँ की तबीयत बहुत बिगड़ गई थी। जाँच से पता चला की माँ को आखिरी स्टेज का कैंसर है। पूरा घर सदमे में था, पर एक माँ ही थी जो सहज थी।दिल्ली के धर्मशाला में माँ का ईलाज शुरू हुआ, पर स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। अंत में माँ के ज़ोर देने पर उन्हे घर वापिस ले आया गया। अब हर दिन मृत्यु के करीब होने का एहसास घर के सब सदस्यों को होने लगा। यह एहसास सूरज उगने के साथ सूरज के ढलने तक बना रहता था। मैं माँ के साथ हर समय रहती थी। सुबह उठती और एक दुखद भय के साथ माँके चेहरे को देखती। धीरे से उसके गालो को छूती। माँ हमेशा आँख खोल के मुझे देखती थी।शायद जानती थी की मैं डर रही हूँ। माँ धीरे से मुस्कुरा कर मुझे ढाढ़स बंधाती। फिर अपनी दर्द भरी आंखे मूँद लेती थी, शायद मेरे डर को बढ़ाना नहीं चाहती थी।

माँ और बेटी के बीच अब एक अनोखा संबंध बन गया था और वो था मौन भाषा का संबंध। मैं कभी माँ के सिरहाने बैठकर गीता का पाठ पढ़ती, कभी हनुमान चालीसा पढ़ती और माँ आँख बंद कर सबकुछ सुनती रहती।

कहते है न बेटियाँ शादी के बाद पराई हो जाती है। मुझे भी बीच-बीच में अपने ससुराल जाना पड़ता था। वहाँ की ज़िम्मेदारी पूरी करके फिर माँ के पास आ जाती थी। जब भी जाती यही सोचती थी न जाने माँ कैसी होगी कही कोई बुरी सूचना न मिले। जल्दी से माँ के पास वापिस पहुँच जाना चाहती थी।

माँ मेरी जिम्मेदारियों को समझती थी, इसलिए जब भी मैं ससुराल जाने के लिए तैयार होती तो मुझे कहती चिंता मत करना मैं ठीक हूँ। बस तुम जल्दी से आ जाना। मैं जानती थी माँ भीतर ही भीतर डर रही थी। शायद अपने

परिवार को खोने का डर था।मैं एक झूठी मुस्कुराहट के साथ उससे विदा लेती थी। अंदर से तो मैं भी डरी हुई थी कभी ऐसा न हो कि मैं ससुराल जाऊँ और पीछे से माँ को कुछ हो जाये। बस ईश्वर भरोसे सब छोड़ कर मैं ससुराल की जिम्मेदारियाँ निभाने चली जाती थी। ससुराल पहुँचकर भी मन माँ के पास ही रहता था फिर का सारा इंतजाम करके वापिस माँ के पास पहुँचने की खुशी होती थी उससे ज्यादा यह सोचकर खुशी होती थी की माँ जिंदा है। एक दिन जब ससुराल वापिस जाने के लिए तैयार हुई तो माँ ने हाथ पकड़ लिया धीरे से बोली –"गुड़िया अब मत जा।" मेरे हाथ बैग की तरफ बढ़ ही रहे थे की हाथ अचानक रूक गए। तुरंत पति को फोन किया और उन्हें माँ की इच्छा के बारे में बताया। कहते है न अगर ससुराल में पति आपके साथ है तो आप को फिर किसी का भय नहीं रहता है। मेरे पति मौके की नजाकत को अच्छी तरह समझते थे, इसलिए उन्होने मुझे वही रहने के लिए कह दिया और हिदायत भी दी की माँ को एक पल के लिए भी न छोड़ू। मैंने भी राहत की साँस ली और माँ के सिरहाने बैठ गई।

वो मुझे देखती रही शायद कुछ पूछना चाहती थी। मैंने उसके बालों में हाथ फेरते हुए कहा–"माँ तुम्हारे जवाई जी (दामाद) ने ही कहा है की मैं तुम्हारे ठीक होने तक यही रहूँ।" हलाकि हम दोनों ही जानती थी अब कुछ भी ठीक होने वाला नहीं है। तभी माँ ने धीरे से उठते हुए मुझे इशारा किया की मैं कमरे के खिड़की दरवाजे सब बंद कर दूँ। मैंने माँ को बैठने में मदद की और उसके कहे अनुसार कमरे के खिड़की दरवाजे बंद कर दिये। माँ ने इशारे से कहा की एक पैन और डायरी ले आऊँ। मैं आज्ञाकारी बच्चे की तरह काम कर रही थी।

माँ ने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। उसने अपना सारा जेवर घर के हर सदस्य में बड़ी ही खूबी से बाँट दिया। यहाँ तक की मेरे बच्चे के लिए भी दिया, जबकि मेरे अभी कोई संतान ही नहीं थी।

मैंने उसकी संपत्ति का बंटवारा एक डायरी में लिख दिया। उसको जब लिखा दिखाया तो उसने मुझे दोनों हाथो से प्यार किया। फिर अपने हाथ से अपनी अंगूठी निकाल कर मुझे देते हुए कहा–"गुड़िया यह मुझे मेरी माँ यानि

तेरी नानी ने दी थी और उसको उसकी माँ ने, अब यह मैं तुझे दे रही हूँ। तुम्हारी अगर बेटी हो तो तुम उसको दे देना।"

मुझे उस समय बहुत गर्व हो रहा था की सभी भाई-बहनों में मैं ही सौभाग्यशाली थी जो माँ के करीब थी। मेरी आंखो से आँसू छलकने लगे। सच ही है बेटों को माँ का सानिध्य माँ के आँचल में, फिर बेटी के रूप में और कुछ समय बाद पत्नी भी माँ की ही तरह देखभाल करने लग जाती है पर बेटियाँ जीवन में एक ही बार माँ का सुख अनुभव कर पाती है। बस मुझे भी माँ का सानिध्य कुछ दिन और मिलने वाला था।माँ ने मेरे सिर पर हाथ फेर कर कहा–"गुड़िया जानती है बेटियाँ सारी उम्र के लिए एक ऐसे घर ब्याह दी जाती है जहाँ उनके नाम का जिक्र भी नहीं होता है। किसी और की पीढ़ी बढ़ाने के लिए वो बेटे को जन्म देती हैं पर उस बेटे पर उसका अधिकार भी नहीं होता। वो बेटे दूसरे की विरासत को आगे बढ़ाते है लेकिन जानती है जब वो एक बेटी को जन्म देती है तब मन ही मन बहुत खुश होती है जैसे मैं सीमा (मेरी बड़ी बहन) और तुम्हारे जन्म के समय हुई थी। एक माँ बेटी में अपनी छवि को देखती है। कही न कही अपनी सहेली को देखती है जिसके साथ वो अपने सारे दुख-सुख कह सकती है और सबसे ज्यादा खुश इसलिए होती है की बेटियाँ उसकी विरासत को आगे बढ़ाती है। उसके संस्कार की छवि आगे ले जाती है। गुड़िया तू मेरी विरासत है और मेरी सहेली भी। इसलिए गुड़िया जब में मरूँ तब तुम मेरे पास ही रहना। मैं अपनी विरासत को आखिरी समय तक देखना चाहती हूँ।"

मैं बस रो रही थी... क्योंकि मैं आज तक यही समझती रही थी बेटियाँ पराई होती है, दूसरों की अमानत होती है पर माँ ने तो कहा की मैं उनकी विरासत हूँ। माँ ने मेरे आँसू पोछे और अपने आँसुओ को बह जाने दिया। कैसी विडम्बना थी की आप की सबसे कीमती चीज आपके सामने समाप्त हो रही हो और आप भगवान से उसके स्वस्थ होने की प्रार्थना भी नहीं कर सकते हो। माँ शायद थोड़ा थक गई थी इसलिय मैंने उसे लिटा दिया।

एक बोझिल और दुख का वातावरण तो था ही पर "मैं उसकी विरासत हूँ" माँ का यह वाक्य मुझमे एक ऊर्जा भर रहा था। माँ सो चुकी थी। मैंने घर के

सभी सदस्यों को सबकुछ बता दिया। माँ ने जो जो लिखवाया था वो दिखा दिया। सभी हकीकत से परिचित थे।

अगले दिन माँ कोमा में चली गई। मेरी और उनकी यह आखिरी बातचीत थी। अब न माँ कोई इशारा करती, न ही मेरे हाथ फेरने पर आंखे खोलती। बस अब दोनों के बीच मौन की भाषा का संचार हो रहा था। पर अब हम दोनों की आत्माओं का संपर्क हो रहा था। कभी-कभी मेरे भीतर इतनी बैचेनी ही जाती थी की मुझे लगता था की मैं क्या करूँ की अपनी माँ को बचा संकू। इस बैचनी से बचने के लिए मैं अक्सर माँ के कान में उसको आवाज दिया करती थी और माँ बंद आँखों के कोर से दो दर्द भरी बूंदे छलका दिया करती थी। वो आँसू मेरी तसल्ली का कारण बन जया करते थे की माँ अभी जीवित है, पर यह साथ ज्यादा दिन तक ठहर न सका। ग्यारहवे दिन ही माँ ने प्राण त्याग दिये और यकीन मानिए उस दिन सुबह पाँच या छ बजे होंगे जब मैं उठी और सीधा माँ को ही देखने उनके कमरे में चली गई जो इतने दिन से कोमा में थी अचानक मैंने देखा की माँ का एक हाथ ऊपर उठा हुआ था और वो मुझे देख रही थी। मैं समझ गई थी विदाई का समय आ गया था। मैंने भी माँ को अंतिम प्राणाम किया और अपने बाबा और भाई को आवाज दी। माँ ने अंतिम साँस ली थी। विदा कह गई थी वह हम सबको, पर मैं उससे विदा न ले सकी। उसकी कही बातें मेरे जेहन में गूंजने लगी थी। मैंने भी उसकी बात का मान रखा था उसके अंतिम समय में मैं उसके पास थी। उसकी विरासत उसके पास थी। स्त्री का अस्तित्व नगण्य ही रहता है परंतु बहुत ही सहजता से वह अपनी निशानियाँ मूक रूप में धारा पर छोड़ जाती है। यह निशानियाँ न जाने कितनी पीढ़ियों के संस्कार अपने में समेटकर जीवन लीला में रच बस जाती है। सारी जिंदगी अपनी पहचान के लिए संघर्ष करने वाली स्त्री अपनी छवि को देखकर प्रसन्नता के समुद्र में डूब जाती है यह बात अलग है की यह प्रसन्नता और गर्व का भाव वो कभी किसी से सांझा नहीं करती है। इसलिए आज भी माँ की तस्वीर के सामने जब जाती हूँ तो आंखे बंद करके उसको अपने भीतर महसूस करती हूँ। गर्व से भर जाती हूँ कि मैं अपनी माँ की विरासत हूँ।

वैलेंटाइन

'दादू जल्दी करों हम लेट हो रहे हैं।'-विभा ने जल्दी- जल्दी अपने बैग में पूजा का सामान डालते हुए अपने सत्तर वर्षीय दादाजी को कहा। शिवदास जी ने विभा का आदेश सुन अपने बूढ़े हाथों को जल्दी चलाना शुरू कर दिया। जल्दी-जल्दी जूता पहनकर घर से बाहर निकलते हुए उन्होंने विभा से पूछा– 'विभू सब ले लिया है ना, कुछ भूल तो नहीं रहे हम।'

'ओह हो! क्या बात हैं दादू, आज तो बहुत सुंदर दिख रहे हैं। (विभा ने चुटकी लेते हुए कहा) और रही बात भूलने की तो मैं श्रीमान शिवदास और उमा देवी की पोती हूँ, भला मैं कुछ भूल सकती हूँ।' विभा ने शिवदास के आगे अपने अस्तित्व पर गर्व होने का प्रमाण भी दे दिया। शिवदास भी मन ही मन गर्व का अनुभव करने लगे।

दोनों घर से बाहर निकल गए। विभा ने ध्यान से ताला लगाया और दादाजी का हाथ पकडकर कार की और ले जाने लगी। दादा जी भी छोटे बच्चे की तरह विभा के पीछे-पीछे चल दिये।

शिवदास जी का भरा-पूरा घर हैं। एक बेटा-बहू हैं, जिनकी प्यारी सी बेटी विभा हैं। बेटा-बहू दोनो कंपनी में काम करते हैं। विभा अपने कालेज की पढाई पूरी कर रही हैं। शिवदास जी के साथ वो ही ज्यादा समय बिताती हैं। दादा-पोती का रिश्ता अब दोस्ती में बदल गया है।

शिवदास जी के अकेलेपन का एकमात्र सहारा विभा ही है। अगर विभा न होती तो शायद आज वो अकेलेपन के कमरों में सिमट चुके होते।

दोनो कार में बैठ गए। कार तेजी से सड़क पर दौड़ने लगी। विभा की नजर कभी ट्रेफिक सिग्नल तो कभी अपने दादाजी के चेहरे पर जा टिकती थी। शिवदास की बूढी और धुंधली पड़ चुकी आँखे किसी को खोजने लगी थी तभी विभा ने कहा –'परेशान मत होइए। आज यहाँ का बाज़ार बंद रहेगा। हमे खन्ना बाजार से फूल लेने होंगे।' छोटे बच्चे की इच्छा जैसे पूरी होती है वैसे ही शायद शिवदास जी की इच्छा पूरी हो गई थी। वह शांति से बैठ गए और अपनी पोती को धन्यवाद देने की नजरों से देखने लगे।

तभी विभा ने एक सुंदर से फूलों की दुकान पर कार को रोक दिया और अपने दादा की तरफ देखकर थोड़े शरारती लहजे में कहा–'जाइए नवाब साहब अपनी वेलेंटाईन के लिए गुलाबों की खुशबू खरीद कर ले आइए।' शिवदास जी पोपली हँसी हँसते हुए कार का दरवाजा खोलकर नीचे उतरे और तेज क़दमों से दुकान की और बढ़ गए। उनके कदम उनकी खुशी का साथ दे रहे थे। बिना लड़खड़ाए वह दुकान के भीतर दाखिल हो गए। अनेक प्रकार के फूलों की दुनिया में शिवदास जी अपने आपको खिला हुआ महसूस कर रहे थे।

दुकान पर सजाए हुए फूलों में कुछ देर अपनी यादों को खोजते रहे, फिर लाल गुलाब के फूलों को देखकर रुक गए। दुकानदार ग्राहक की इच्छा को समझ चुका था। उसने भी मौका हाथ से जाने नहीं दिया लपककर लाल गुलाब का गुच्छा शिवदास जी की ओर बढ़ा दिया। 'सर बहुत ही ताजे और खुशबूदार है आज तो मैडम खुश हो जाएँगी।' -दुकानदार ने अपने शब्दों में रस घोलते हुए कहा।

उसकी आवाज़ सुनकर जैसे शिवदास अपने अतीत से वापिस आ गए थे।' गुलाब के फूलों का गुच्छा बनाना और ऊपर से रोज वाटर भी डालना ताकि ओस की बूंदों का अहसास हो।'- शिवदास जी ने उत्साह से भरकर कहा। 'जी सर! अभी करता हूँ।'-दुकानदार ने शिवदास जी के आदेश का पालन किया।

शिवदास जी कार में वापिस आ गए और अपने साथ अपनी वैलेंटाइन का तोहफा भी ले आए।

हाथ में गुलाब के फूल, आँखों में कुछ गीली यादें और होठों पर एक हल्की सी मुस्कान लिए कार की खिड़की के बाहर देखने लगे, जैसे शिवदास जी पहली बार किसी लड़की से मिलने जा रहे हो।

थोड़ी देर में कार जय प्रकाश अस्पताल के आगे जा रुकी। दोनों कार से ऊतर कर अस्पताल की ओर चल दिए। रिसेप्शन पर पहुँचकर विभा ने सारी औपचारिकता पूरी की और दोनों वार्ड नम्बर ग्यारह की ओर बढ़ गए। वार्ड का दरवाज़ा खोलकर दोनों भीतर गए। विभा ने बिस्तर पर लेटी एक शांत महिला

के पाँव छुए और अपने दादाजी की और देखकर कहा-'दादाजी आल दी बेस्ट आपकी वेलंटाईन आपका इन्तजार कर रही है।'

बिस्तर पर लेटी वो शांत महिला उमा शिवदास है, जो शिवदास जी की धर्मपत्नी है और सात साल पहले कोमा की गोद में सो चुकी है। शिवदास जी स्वभाव से जितने जिद्दी और गुसैल थे, उमा उतनी ही शांत स्वभाव की थी। अपने विवाह के पैंतालिस वर्ष की यात्रा में शिवदास जी ने न जाने कितनी बार उमा का अपमान किया, उसका ह्रदय आहत किया, ऐसा कौन सा त्यौहार था जो शिवदास की क्रोध की अग्नि की भेंट न चढ़ा हो। जीवन का हर निर्णय शिवदास जी ने अपनी इच्छा से लिए थे। उमा की सहमति मात्र औपचारिक ही थी। इच्छाओं का पतन व्यक्ति को तोड़ देता है, पर हर बार उमा अपने आपको समेटकर खड़ी हो जाती थी लेकिन ईश्वर की लीला कुछ और ही होनेवाली थी। उमा की बढती उम्र ने उसका साथ छोड़ दिया था। अचानक एक दिन उमा आँगन में चक्कर खाकर गिर पड़ी और ऐसी गिरी की सात साल से बिस्तर से ही नहीं उठ सकी।

उस दिन से लेकर आज तक शिवदास अपनी उमा के अहसास को एकपल भी नहीं भूलने देना चाहते है और आजतक शिवदास जी अपनी पत्नी के प्रति अपनी वफ़ादारी सात साल से हर दिन निभाते आ रहे है।

आज भी वो उमा को अपने साथ महसूस करना कहते है। शिवदास जी ने पास रखा स्टूल अपने पास खींचा और उस पर बैठ गए। हाथ में रखे फूल टेबल पर रखे वास में सजा दिए। विभा ने पूजा का सामान दिया। शिवदास जी ने देवी चालीसा का पाठ किया और पूजा के कुमकुम से उमा के माथे पर तिलक और मांग को लाल कुमकुम से भर दिया। इस अनोखे प्रेम की एक मात्र साक्षी विभा ही थी। विभा ने अपनी उम्र की समझदारी का परिचय देते हुए कहा– 'दादू आप बातें करो। मैं बाहर आपका इन्तजार करती हूँ।'

विभा के जाने के बाद शिवदास जी ने उमा की और देखकर कहा– 'उमा आज मैं समय पर आ गया न। तुम हमेशा कहा करती थी की मैं कभी समय पर नहीं आता हूँ। देखो ! आज तुम्हारे मनपसंद गुलाब के फूल भी लाया हूँ। (शिवदास जी का चेहरा कुछ मुरझा-सा गया। अपने ह्रदय की पीड़ा को वह अपने आँखों से

छलकने से रोक न पाए) तुम हर वेलंटाईन पर लाल गुलाब लाया करती थी और मैं.... कभी उनको देखा भी नहीं करता था। तुम हमेशा मुझसे पूछा करती थी आपकी वेलंटाईन कौन है? और मैं.... तुमको झिड़क दिया करता था। उमा मैंने तुम्हें बहुत सताया है। मैंने तुमको कभी कुछ नहीं दिया। हमेशा अपने काम में ही व्यस्त रहा। तुम्हारा जन्मदिन, त्यौहार, शादी की सालगिरह और वेलंटाईन... कुछ भी तो नहीं मनाया तुम्हारे साथ। तुम पर बस अपनी इच्छाएँ लादता रहा, तुम पर सारी भड़ास निकालता रहा और तुम न जाने कैसे कड़वे घूंट पी जाया करती थी। उमा मैंने तुमको जीने नहीं दिया। कोई ख़ुशी का पल भी नहीं दिया। जब से तुम चुप हुई हो, ऐसा लगता है मानो मैं इस दुनिया में अकेला हूँ।' शिवदास जी की आवाज़ में दर्द की खनक साफ़ सुनाई दे रही थी। इन सात साल में कोई भी दिन ऐसा नहीं था जब वह ऐसा नहीं करते थे और वेलंटाईन का दिन वो तो उनके लिए ख़ास था।होता भी क्यों न इसी दिन उमा के साथ सात जन्मों के बंधन में वो बंधे थे। पर आज उमा खामोश थी और शिवदास जी अपने सारे गुनाहों की माफ़ी मांगना चाहते थे।

'प्लीज उमा, अब वापिस आ जाओ। मैं तुम्हारे बिन नहीं जी सकता। जिंदगी के आखिरी दिन तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ।'-उन्होंने अपनी पत्नी के सर पर हाथ रखा और याचक की तरह याचना करने लगे।

सही कहा है किसी ने जब हम अपनी जिंदगी शुरू करते है, तो खुशियों को बाहर ढूँढना शुरू कर देते है। अपने काम में इतना व्यस्त हो जाते है की जो हमारे पास खुशियाँ है उसको देखते भी नहीं। कई बार हमारा गुसैल स्वभाव हमारे जीवन में आग लगा देता है। पवित्र बंधन अग्नि की भेंट चढ़ जाते हैं। वो समुद्र से गहरे संबंध, जो कही खारे पानी की लहरों में समा जाते है, उन संबंधों के मोती हम चुनते ही नहीं। जब समय निकल जाता है तब.. तब हम पछताने के सिवा कुछ नहीं करते हैं।

शिवदास जी भी आज अपने पछतावे के सैलाब को बह जाने की इजाजत दे रहे थे। उन्होंने उमा का हाथ थाम लिया। आज शायद वो अपनी जिद्द पर अड़ गए थे। छोटे बच्चे की तरह वो रोने लगे और उमा को वापिस दुनिया में बुलाने की कोशिश करने लगे।

बाहर खड़ी विभा ने जब दादाजी की आवाज सुनी तो वो अंदर कमरे में तेजी से दाखिल हो गई। शिवदास जी को इस तरह बिलखता देखकर उसकी आँखे भी भर आई। शायद बजुर्ग प्रेम की ऐसी अभिव्यक्ति उसने पहली बार देखी थी। वो शिवदास जी के पास आई और बोली– 'दादाजी संभालिये अपने आपको। अगर आप ऐसा करेंगे तो दादी सहन नहीं कर पाएंगी। वो एक दिन जरूर वापिस आएगी।'

शिवदास जी ने पीड़ा से भरी आँखों से विभा को देखा जैसे वो अपनी स्वीकृति देना चाहते हो और उमा की और देखकर कहा–'उसे आना ही होगा विभा, बस एक बार वो मुझे वापिस मिल जाए।मैं अपनी गलतियों की माफ़ी उससे माँगना चाहता हूँ।'

विभा नहीं जानती ही की वो क्या करे, बस अपने दादा और दादी के प्रेम की साक्षी बनी हुई थी।

तभी विभा ने दादाजी का कन्धा हिलाया जैसे कुछ कहना चाहती हो। वो धीरे से अपनी दादी की ओर बढ़ गई।

उसकी आँखों को जैसे विशवास ही नहीं हो रहा था। उसकी दादी के दाहिने हाथ की अंगुली कुछ हिलने की क्रिया कर रही थी, तभी उसने अपने हाथों को दादी की आँखों की ओर बढ़ा दिया और अपनी अंगुली से दादी की बंद आँखों से झलक रहे आंसुओं को उठा लिया। उसकी अंगुली पर आंसू की एक बूंद किसी कीमती मोती की तरह दिख रही थी। उसने धीरे से दादाजी को कहा– 'दादू आपकी वैलेंटाईन आपकी बात सुन रही है.... देखिए यह।' शिवदास जी भी आश्चर्य से उस मोती को देखने लगे।वो एक नई चेतना से भर गए उन्होंने विभा को भर्राई आवाज़ में कहा- ' विभा डाक्टर को बुलाओ जल्दी।'

विभा कमरे से बाहर निकलकर तेजी से मदद मांगने के लिए दौड़ पड़ी।

शिवदास जी उमा का हाथ थामकर बैठ गए और भगवान से प्रार्थना करने लगे, साथ-साथ अपनी गलतियों का हिसाब भी करने लगे ताकि वह अपनी वैलेंटाइन से माफ़ी मांग सके।

खुशियों की दुनिया

सुधा अपने कमरे की खिड़की से बाहर देख रही थी। न जाने कितने ही विचार उसके मन के पटल पर दौड़ जाते। बीच-बीच में एक लम्बी साँस ले लिया करती थी। आज भी उसका मन बैचेन था पर मस्तिष्क जैसे सुन्न पड़ा हुआ था।

होता भी क्यों न, शादी को पाँच साल बीत गए थे, पर सुधा आज भी किलकारियों का सुख नहीं पा सकी थी।आदमी के पास कई साधन होते है पर जब समाज उन साधनों के पास पहुँचने न दे तब आदमी केवल घुटन महसूस करने की सिवा कुछ नहीं कर सकता है यही हाल सुधा का हो रहा था। वो अन्दुरुनी घुटन की शिकार हो चुकी थी।एक ऐसा हिरन जिसकी गर्दन शेर के नुकीले दांतों में दबी होती है वैसे ही सुधा का जीवन कुटीले तानो के बीच दबा हुआ था।

जब उसका दिमाग शून्य हो जाता, तब वो कुछ सकून के पल महसूस करती थी। आज भी खिड़की की ओर देखकर भावविहीन मुद्रा में सकून के ठंडी हवा का आनंद ले रही थी।

पर यह आनंद वो ज्यादा देर तक न ले सकी। सुधा की सास ने उसको आवाज़ दी और याद दिलाया की उसको आज डाक्टर के पास जाना हैं। सुधा सास की आवाज में छिपा व्यंग्य बाण झेलने की आदी हो चुकी थी। एक सहमे हुए बच्चे की तरह वो तैयार होने के लिए चली गई।

न जाने कितने डाक्टरों से सुधा मिल चुकी थी। तकलीफ यह नहीं था की वो डाक्टरों से मिल रही है। तकलीफदेह यह था की हर बार वो उम्मीद से बंध जाती थी और हर महीने वो उम्मीद की डोर उससे छूट जाया करती थी।

जब भी वो क्लीनिक जाया करती थी, वहां बैठ कर अपने दुःख को कम पाया करती। उसे लगता वो कम दुखी है ओरों को तो ज्यादा तकलीफ व मानसिक तनाव है। जब किसी को प्रेग्नेंट देखती तो उसे अपनी आशा की डोर दिखाई देती। सच औरत होना अपने आप में ही रहस्य है। कितने उतार-चढाव आ जाए पर हर बार वो अपने भीतर की लौ को जला ही लेती है। इन पाँच सालो में उसकी दुनिया जैसे थम सी गई थी। कोई भी ख़ुशी, कोई भी अहसास किलकारियों की गूंज तक सिमट कर रह जाता।

पूरे दिनभर में एक लम्हा ऐसा होता जब वो मुस्कुराती थी, जब वो अपनी दुनिया से बाहर निकलकर वास्तविकता की दुनिया में आती और वो लम्हा उसे उसके पति अजय के साथ मिलता। अजय बेहद ही खुश दिल, उमंग से भरा हुआ इंसान है।

जब भी दोनों साथ होते तो सुधा, अजय की ही होकर रहती।कभी-कभी तो कहती भी थी- "न जाने कौन सा जादू किया है तुमने की शादी को पाँच साल हो गए पर लगता है, जैसे हमारी कल ही शादी हुई हो।"

संजीव भी शरारत में कहता –"पता चलेगा कैसे? मैं हूँ ही ऐसा।" दोनों की खिलखिलाहट फ़िजाओं में जैसे फूलों की खुशबू बिखेर देती।

सुधा जल्दी-जल्दी तैयार होने लगी। अजय ने बाहर से ही गाड़ी का हौर्न बजा दिया था। अपने सारे डाक्टरों के प्रिस्क्रिप्शन लेकर सुधा घर से बाहर निकल गई। इन पाँच सालों में सुधा ने जो जोड़ा था वो आज उसके हाथों में था। उसे हर बार ऐसा लगता जैसे वो अपने औरत होने के प्रमाण देने या लेने के लिए जा रही हो।

सुधा जल्दी से गाड़ी में बैठ गई। उसे देखते ही अजय ने कहा –"क्या बात हैं आज तो गजब ढा रही हो। कही तुम्हारी खूबसूरती देखकर डाक्टर तुमपर फ़िदा न हो जाए।"

"क्या आप भी...।" सुधा ने गाड़ी में बैठते हुए कहा।

अजय ने एक प्यारी सी मुस्कान सुधा की तरफ उछाल दी फिर मसखरी वाले अंदाज में कहने लगा –"मैडम हमारा ख्याल रखना ऐसा न हो।" और गाड़ी में अजय के जोर-जोर से हंसने की आवाज गूंजने लगी।सुधा भी धीरे से मुस्कुरा दी।

गाड़ी सड़क पर गतिमान हो गई और उसके साथ ही सुधा की दुनिया भी।सुधा फिर से किलकारियों की आस की डोर में बंधने लगी। वो इतनी शांत थी की उसे अहसास ही नहीं हुआ की अजय भी उसके साथ है।

तभी अजय ने जोर का हौर्न बजा दिया। अजय जैसे उसे अपने पास बुलाना चाहता था।

सुधा चौंक गई अजय से पूछने लगी–"क्या हुआ? इतनी जोर से हौर्न क्यों बजा रहे हो।"

अजय तो आज मसखरी करने के ही इरादे से था। तपाक से बोला – "गाड़ी में संगीत के नाम पर यही है, अगर तबला होता तो जरूर तुम्हारे लिए बजा देता।"

सुधा एक बार फिर थोड़ा रुठते हुए बोली –"क्या आप भी न... हर समय हँसी-ठिठोली करते रहते हो।"

"आज भी अगर रिपोर्ट में कुछ नहीं आया तो....।"सुधा रूआसी होकर बोली।

"तो? तो क्या....देखो डियर! आज तुम जब तक गाड़ी में हो, न कुछ कहोगी न सोचोगी, बस जो मैं कहूँगा उसको सुनोगी।"

सुधा ने भी आज्ञाकारी बच्चे की तरह हामी में सर हिला दिया।

अजय के चेहरे पर जैसे जीत की लहर दौड़ गई। उसने सुधा को प्यार भरी नजरों से देखते हुए कहा–"सुधा तुम्हें याद है हमारी शादी की पहली रात, जब हम दोनों ने एक दूसरे के चेहरे को ठीक से देखा था।"

सुधा के चेहरे पर लज्जा की लालिमा दौड़ गई।उसने हामी से सर हिला दिया –"हाँ ! पहली बार मैं किसी अजनबी लेकिन अपने के साथ अकेली एक कमरे में थी।"

अजय के चेहरे पर भी एक मुस्कान छा गई।

"याद है सुधा मैंने तुम्हारी मुँह दिखाई में तुमको क्या दिया था।"

"हाँ ! याद कैसे नहीं होगा ..तुम्हारा पहला तोहफा मैं आज भी अपने दिल के करीब रखती हूँ जनाब।" सुधा ने अपने मंगलसूत्र की ओर इशारा करके कहा।

"बस यही याद है....या कुछ और भी है। इस बार अजय सुधा की ओर देखकर मुस्कुराया।

"शैतान कही के...।" सुधा ने थोड़ा शर्माते हुए कहा।

"अरे ! मैं शैतानी कहाँ कर रहा हूँ। तुम औरते भी न खुद ही खिचड़ी पकाती हो और खुद ही खाती हो। मैं तो बस तुम्हें कुछ याद दिलाना चाहता हूँ।"

"और वो क्या बात है भला, जो मुझे याद नहीं।शादी की पहली रात तो हर किसी के जीवन के अनमोल यादों में से होती है।" सुधा ने थोड़ा अकड़कर कहा।

"तुम्हें याद है मैंने तुमसे सुहागरात वाले दिन कुछ कहा था।" अजय ने सुधा की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुए कहा। सुधा अब कुछ सोचने लगी। थोड़ी देर सोचने पर जब उसे याद नहीं आया, तो वो शर्मिंदा होकर अजय को देखने लगी, जैसे माफ़ी मांगना चाहती हो।

अजय शायद इसी मौके की तलाश में था। उसने गाड़ी को सड़क के किनारे रोक दिया और सुधा की ओर देखकर कहने लगा–"सुधा तुम अपनी एक ऐसी दुनिया में रहने लगी हो, जहाँ तुम अपने सुनहरे अतीत की यादों को भी भूल गई हो। याद है तुम्हें जब पहली रात में हम मिले थे। तुम डर कर काँप रही थी। कितना सहम गई थी तुम जैसे एक हिरन, बाघ को देखकर सहम जाता है। शायद मिलन की घबराहट ने तुमको असहज कर दिया था। तुमको सहज करने के लिए मैंने तुमसे बातें करनी शुरू कर दी थी।तब जाकर तुम थोड़ा सहज हो पाई थी और तब मैंने तुम्हें अपनी कमाई से खरीदा हुआ सोने का मंगलसूत्र दिया था। यह मेरे जीवन की पहली खरीदारी थी जो मैंने किसी महिला के लिए की थी। याद हैं तुम्हें मैंने तुम्हें मंगलसूत्र पहनाते हुए क्या कहा था... नहीं ना... याद नहीं है न तुम्हें। सुधा मैंने तुम्हें कहा था, मैं तुमको पाना नहीं चाहता बल्कि तुम्हारे साथ जीवन जीना चाहता हूँ। हर दुःख- सुख तुम्हारे साथ.. मेरी जान आज मैंने इन पाँच सालो में बहुत कुछ पा लिया है। गाड़ी, अच्छी नौकरी, घर, अच्छे संबंध.... सब कुछ पा लिया पर सुधा जीना....। तुमने अपनी एक दुनिया बना ली जिसका कोई अस्तित्व अभी है ही नहीं..... और उसी को जीना समझने लगी हो। सुधा मेरे साथ तुमको भी जीना है, जो अभी दुनिया में है ही नहीं उसके लिए आज की खुशियाँ दाव पर लगाना क्या उचित है।"

सुधा एक मासूम बच्चे की तरह डबडबाई आँखों से अजय को देखने लगी उसके पास कोई उत्तर नहीं था। अजय ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा–"सुधा हम दोनों को एकदूसरे को पाना नहीं है, बल्कि एक दूसरे के साथ जीना हैं।"

सुधा की आँखों का सैलाब बहने लगा था। अजय ने सुधा का चेहरा अपने हाथों में लेते हुए कहा–"मैं तुम्हें पाना नहीं बल्कि तुम्हारे साथ जीना चाहता हूँ। बच्चे के जन्म से ही दुनिया पूरी होती है तो सुधा यह गलत है। मेरी दुनिया सिर्फ तुम हो....जिसके साथ मैं जीना चाहता हूँ..... जरा बाहर की ओर देखो।"

सुधा ने अपनी भर आई आँखों से बाहर की ओर देखा। सुधा डाक्टर की ओर जाने वाले रास्ते नहीं बल्कि मसूरी की ओर जाने वाले रास्ते पर थी, सड़क के दोनों ओर लाल गुलाब के फूल बिक रहे थे। नव जोड़ों की आवाजाही से रौनक का मेला लगा था। सड़क के दूसरी ओर 'करुणा विहार बच्चा आश्रम' था। सुधा अपने आपको रोक नहीं पाई और एक वेगवती नदी की तरह बहती चली गई।

"हाँ ! सुधा तुम्हारी दुनिया और मेरी जिंदगी तुम। तुम्हें अपने आपको तकलीफ देने की अब जरुरत नहीं हैं, जरुरत है मेरे साथ जीने की। मेरा ट्रांसफर भी हरिद्वार हो गया है। पास में रहेंगे तो घर की देखभाल भी हो जायगी, थोड़ा दूर रहेंगे तो तुम तानो से बच सकोगी और मेरे साथ हर पल को जी सकोगी। तुम्हें मंजूर हैं।" अजय ने सुधा से बहुत भावुक होकर कहा यह कहते हुए उसकी आँखे सुधा की आँखों में कुछ ढूंढ रही थी।

सुधा ने अजय की ओर देखकर कहा–"थेंक्यु अजय... मैं जैसे जीना ही भूल गई थी। मैं तुम्हारे सपनो के साथ जीना चाहती हूँ।" यह कहकर सुधा अजय के गले लग गई जैसे अपनी जिंदगी से दुबारा मिल रही हो।

अजय को जो चाहिए था वो मिल गया था उसने भी सुधा को अपनी बाहों में भर लिया और कहा–"हैप्पी वैलेंटाइन मेरी जान.. तो चले आपकी खुशियों की दुनिया को लेने। दोनों गाड़ी से ऊतर कर आश्रम की ओर बढ़ गए।"

सड़क के किनारे फूलो की सुगंध चारों और फ़ैल गई थी। नव जोड़े नई दुनिया के सपनो को फूलो के रूप में, हाथों में लिए एक दूसरे के साथ कदम से कदम मिला रहे थे। सुधा ने आज अपनी दूसरी दुनिया के दरवाजे सदा के लिए बंद कर दिए, अब वो अजय के साथ खुशियों को जीना चाहती थी। उसने भी अजय के साथ कदम मिला दिए थे। आज खुशियों की दुनिया में सुधा ने प्रवेश कर लिया था।

प्रयास के लिए

सुबह के पाँच बज रहे होंगे की अनुजा झटके से उठ बैठी। अपनी अलसाई नींद से पीछा छुड़ाने लगी। फिर उसने उनींदी आँखों से मोबाइल में समय की गति को देखा ।

"पाँच बज गए....।" कहती हुई झट से नींद को धकेलती हुई खड़ी हो गई।उसके बिखरे बाल अंधेरे में उसके बेढंगे होने का सबूत दे रहे थे।उसने धीरे से कुशल ग्रहिणी का परिचय देते हुये सीधा कमरे का दरवाजा खोला। औरतों की यही तारीफ होती है की वो घर का कोना-कोना पहचानती है। उन्हे किसी रोशनी की आवशयकता नहीं होती है। घर की औरत घर की दरो दीवारों में इस तरह रच-बस जाती है की दीवारें क्या कहती है यह भी उसे पता होता है। अनुजा ने अंधेरे को ही रोशनी की तरह जला लिया था और कमरे से बाहर आ गई।तेजी से किचन की और बढ़ गई। किचन की लाइट जलाकर उसने एक नजर बर्तनों पर डाली।उ सके दिमाग का दरवाजा न जाने कब खुल गया और एक दूसरी अनुजा किचन में आ गई। अनुजा अपने आप से ही बातें करने लगी।" हे राम पाँच बज गए। कल ही प्रयास ने कहा था की राजमा चावल लेकर जाएगा....।" अनुजा जल्दी से प्रेशर कुकर में राजमा की दाल भिगोने लगी।" थोड़ा गरम पानी में रख देती हूँ... फिर प्रेशर कुकर में चढ़ा दूँगी।" अनुजा ने अपने आप से ही कहा।

ऐसा लगा मानो अनुजा के साथ दूसरी अनुजा भी है जो उसकी सारी बातें सुन सकती है।

"ओह ! आटा गूँथकर भी नहीं रखा रात को मैंने... अनुजा क्या करती हो तुम।"-अनुजा ने खुद को ही कोसना शुरु कर दिया। फिर जल्दी से आटे के डिब्बे से आटा निकाल कर परात में डाला लिया। अब अनुजा कुशल रसोइये की तरह आटा गूँथने लगी। बीच-बीच में ड्राइंग रूम में लटकी काल संगिनी को देख लेती थी....। बेचारी काल संगिनी घड़ी लाचार सी दिखाई दे रही थी।

"ओह ! प्रयास के कपड़े भी तो प्रेस करने है ...शुक्र है अभी लाइट है जल्दी जल्दी प्रेस कर लेती हूँ।" अनुजा ने आटा गूँथकर कटोरे में रख दिया। और कमरे में दौड़ पड़ी। उसने धीरे से अलमारी खोली और प्रयास के कपड़े निकालने लगी। अनुजा जानती थी की सब सो रहे है, इसलिए उसने बहुत धीरे

से इस कार्य को किया।सच में माँ के समान कोई नहीं हो सकता है। अनुजा जानती थी प्रयास थोड़ा लापरवाह है।रात को कोई भी काम करके नहीं रखेगा पर वो तो माँ है न कोई बात नहीं.....। अनुजा आइरन बोर्ड की ओर चल पड़ी इससे पहले की लाइट रानी धमकी भरा रुआब दिखा कर चली जाये। अनुजा प्रयास के कपड़ों पर प्रेस करने लगी।

"आज से रात में ही सब कर लिया करूँगी, तो सुबह यह दिक्कत नहीं होगी।सच में यह लड़का भी न.... कुछ नहीं करता है।" अनुजा के होंठ फिर अपने आप से कुछ कहने लगे थे।

"अभी तो उसके जूते भी पालिश करने है। पता नहीं कौन से पहनकर जाएगा।"- अनुजा ने अपने आप से ही सवाल किया था।

जल्दी -जल्दी अनुजा ने कपड़े प्रेस किए और शू रेक की और दौड़ पड़ी। तभी उसको ध्यान आया की राजमा गैस पर चढ़ाने है। वो जूते हाथ में पकड़कर ही किचन में पहुँच गई।उसने धीरे से जूते नीचे रखे।हाथ धोये और राजमा को प्रेशर कुकर में डालकर गैस पर चढ़ा दिया। अनुजा ड्राइंग रूम में आकर बैठ गई और प्रयास के जूते साफ करने लगी। पहली बार उसने घड़ी की और देखा जो बेचारी अनुजा के कार्य की गति से काफी पिछड़ रही थी।

"लो हो गए।"- अनुजा ने इस बार प्रयास के जूतों को जैसे बताया हो की तुम्हें साफ कर दिया गया है।

अनुजा ने गहरी साँस ली और किचन में जाकर चाय का पानी रख दिया।चाय अब धीरे-धीरे अपनी सुगंध बिखेरने का इंतजार करने लगी। अनुजा ने तबतक राजमा के लिए प्याज और लहसुन छील लिया। फ्रिज खोलकर टमाटर ढूँढने लगी।

"अरे ! चार ही टमाटर है। कोई बात नहीं तीन अभी डाल देती हूँ।फिर जब यह सब चले जाएँगे, तब सब्जी मंडी जाकर और ले आऊँगी।" अनुजा ने राजमा छोकने की तैयारी कर ली। फिर उसने घड़ी की और देखा अब भी घड़ी का मुंह लटका हुआ था।

"अभी छ बज गए है। बस राजमा छोंक लेती हूँ, फिर चाय पियूँगी।"- अनुजा ने जैसे कार्य के सुचारु रूप से होने का संकेत दिया था। राजमा छोकने के बाद अनुजा ने चाय का कप हाथ में लिया। इस बार फिर उसने दुबारा घड़ी की ओर देखा जैसे अपनी जीत का ईनाम लेना चाहती हो। अनुजा घड़ी देख धीरे से

मुस्कुरा दी। इस बार घड़ी उसको घूर-घूर कर देख रही थी। जैसे खुद की हार पर उसे गुस्सा आ रहा हो।

"बस पाँच मिनट बाहर बालकनी में बैठकर चाय पी लू। फिर प्रयास और उसके पापा को उठा देती हूँ।"-अनुजा ने अपने आप से ही आगे का काम कह दिया था।

तभी अनुजा को याद आया की उसने मोटर का स्विच तो ऑन ही नहीं किया है। पानी नहीं होगा तो प्रयास और उसके पापा चक-चक करेंगे।
अनुजा ने चाय का प्याला टेबल पर रखा और दौड़ पड़ी मोटर के स्विच की ओर। फिर अपनी इस कामयाबी पर राहत की सास भरते हुये बालकनी में आकर बैठ गयी। चाय की एक घूँट अंदर डालने पर उसे ऐसा लगा जैसे शरीर में एक नई ऊर्जा आ गई हैं और इस नई ऊर्जा के साथ आ गया एक और ख्याल,.

प्रयास ने रात में कहा था–" उसकी फाइल उसके बैग में रख देना सच बच्चे भी न खुद अपना काम नहीं करते है। अब तो इतना बड़ा हो गया है.....।"
आधी चाय बालकनी में छोड़ कर अनुजा अंदर की ओर चल दी टेबल पर देखा तो फाइल नहीं मिली..।

"शायद प्रयास ने ही रख दी होगी... चलो अच्छा है इस बहाने से काम करना तो सीखेगा, वरना उसकी बीबी मुझे ही ताने मारेगी की अपने बेटे को यह भी नहीं सिखाया आपने..।" अनुजा के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई।

तभी फिर से उसने नजर उठा कर देखा तो छ बजकर तीस मिनट हो चुके थे। प्रेशर कुकर भी अपनी हाजिरी दे रहा था। तभी अंदर फ्लैश चलाने की आवाज आई। अनुजा समझ गई की दोनों बाप- बेटे उठ चुके हैं। उसने तुरंत गैस पर चाय को गरम होने रख दिया और अनुज वो तो अभी भी चॉकलेट मिल्क ही लेता है। अनुजा दूसरे कप में चाकलेट डालने लगी और दूसरी गैस पर दूध गरम करने के लिए रख दिया। दोनों के गरम होते ही उसने चाय और दूध के कप तैयार कर दिये।ट्रे में रखकर डाइनिग टेबिल पर रख दिया।

"उठो दोनों चाय और दूध तैयार है।प्रयास जल्दी उठो।देखो सुबह-सुबह देर मत करना। सुबह मेरे लिए बहुत ही हेकटिक होता है।"-सामने कमरे से सुमन निकाल कर आ रहे थे। शायद अनुजा के काम करने से जो आवाज़े आ रही थी उसने उन्हे सोने नहीं दिया था। वो बिलकुल खामोश थे। उन्होने अपनी चाय का

कप लिया और दूध के कप को गौर से देखने लगे। अनुजा किचन में जाकर बची-खुची चाय गरम करने लगी।उसे अपने कप में उड़ेलती हुई सुमन से बोली–"आइये थोड़ी देर बालकनी में चलते है। प्रयास जल्दी करो तुम.....।" प्रयास को उठने का आदेश देकर, वो एक बार फिर से बालकनी में चाय लेकर बैठ गई। उसके पीछे-पीछे सुमन भी पहुँच गए। अनुजा कुर्सी पर बैठ कर ठंडी हवा का आनंद ले रही थी।सुमन स्टूल पर आकर बैठ गए। अनुजा बोली –"प्लीज जरा प्रयास को उठा दीजिये न...यह लड़का भी न.... इसकी रोज की आदत है मुझे तंग करने की। समय पर नहीं उठेगा तो जाएगा कैसे।"

सुमन ने अनुजा की ओर देखकर धीरे से कहा– "अनुजा..।"

"हम्म....जानते है आज मैंने प्रयास के मनपसंद राजमा बनाए है। देखो तुम आज अडजेस्ट कर लेना...। कल तुम्हारी मनपसंद का बना दूँगी।"-अनुजा ने सुमन की बात को अनसुना करते हुआ कहा।

"अनुजा मैं राजमा खा लूँगा.... पर प्रयास... (सुमन की आवाज में बहुत गहराई और सन्नाटा था।) नहीं खा पाएगा।"

"क्यो ऐसा क्यो कह रहे है। उसकी तबीयत तो ठीक है न। तुमसे कुछ कहा क्या उसने.... मुझे तो कुछ कहा ही नहीं.... खैर अभी तो टाइम है, मैं एक काम करती हूँ उसके लिए सैंडविच बना देती हूँ....। तुम बैठो मैं आती हूँ।"-अनुजा सुमन की बात को सुनकर बैचेन हो उठी।"

"अनुजा बैठो यहाँ.. इसकी जरूरत नहीं है अब..।"-सुमन ने गंभीर होते हुये कहा। अनुजा सुमन को ऐसे देखने लगी जैसे सुमन उसके बच्चे के साथ अन्याय कर रहे हो।

"क्या हुआ आपको.....प्रयास से नाराज हो।"

"नहीं....।"- सुमन ने चाय का घूँट भरकर कहा।

"अनुजा प्रयास ही हम सब से नाराज होकर चला गया हैं। अब वो कभी वापिस नहीं आएगा। वह दूसरी दुनिया की यात्रा पर चला गया है, जहाँ से कोई नहीं आता है।"

अनुजा शून्य में देखती हुई सुमन को देखने लगी उसके होठ कुछ कहना चाहते थे पर कह न सके....। अब दोनों के बीच खामोशी थी और घड़ी की सुई की टिक-टिक।

एक साल पहले ही प्रयास की रोड एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी... दोनों बाप बेटे बाजार से आ रहे थे तभी एक बिगड़ैल बाप के बेटे की गाड़ी... धपाक की आवाज हुई और प्रयास की चीखती हुई आवाज..... पापाSSSS। सफ़ेद मौत की चादर कुचलती हुई प्रयास के ऊपर से चली गई।सुमन एक झटके से दूर जा गिरे थे, इसलिए उन्हें ज्यादा चोट नहीं लगी पर प्रयास वो सड़क के दूसरी ओर गिरा पड़ा था। सुमन ने जल्दी ही अपनी तेज हो गई धड़कनों को और अपने आपको संभाल लिया और प्रयास की और दौड़ पड़े। प्रयास आखिरी सांस ले रहा था। शायद वो अभी मौत के लिए तैयार नहीं था, होता भी कैसे सोलह साल का ही तो था मेरा बच्चा। सुमन को अपनी आँखों के सामने देख शायद विश्वास हुआ था उसे की उसके पापा उसे बचा लेंगे ।

प्रयास ने धीरे से बोला–"पापा माँ का ध्यान...।" बस साँसे टूट गई और ऐसी टूटी की फिर जुड़ न सकी। प्रयास की साँस के साथ टूट गए सुमन और अनुजा के सपने... समाप्त हो गया प्रयास का जीवन... वो चला गया किसी और दुनिया में जीने के लिए...। लोगो की भीड़ लग गई थी। प्रयास को हास्पिटल ले जाया गया, जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। लेकिन क्या प्रयास मृत हो चुका था। नहीं... पिछले एक साल से अनुजा हर सुबह उठकर उसके लिए उसकी मनपसंद का खाना बनाती है, उसके जाने की तैयारी करती है, उसकी राह देखती है और यह काम वो अकेली ही करती है। सबने साथ छोड़ दिया, न जाने कहाँ चले गए वो केंडल मार्च करने वाले जो उस अमीर जादे के खिलाफ मोर्चा निकाल रहे थे, न जाने कहाँ गए वो रिश्तेदार... न जाने कहाँ गए वो मंत्री... छुटपुटिए नेता.., मीडिया....। आज अनुजा के साथ कोई है तो वो है सुमन और सुमन की कोशिश, जो शायद अनुजा को एकबार फिर से यथार्थ की दुनिया में लाना चाहती है। सुमन ने धीरे से अनुजा का हाथ पकड़ा जैसे वो उसको अहसास करवाना चाहते थे की अब बस वो दोनों ही है एक दूसरे के लिए।सुमन जानते थे अनुजा क्या कहना चाहती है। अनुजा जो अब तक सब सुन रही थी, उसने उसी क्षण अपनी आँखों में एक नई आशा को भर लिया और सुमन का हाथ थाम

लिया। एक पल को लगा जैसे आज अनुजा सच्चाई को समझ सकेगी और नई शुरुवात कर सकेगी। अनुजा ने सुमन को देखकर कहा –"सुनो... सब ठीक हो जाएगा, बस तुम एक काम करना।प्रयास को एडिडास के जूते दिलवा दो न...। कब से कह रहा है की उसके पुराने वाले जूते टूट गए है... सच मेरा बच्चा दुनिया का सबसे अच्छा बच्चा है। कभी जिद्द नहीं करता है...हैं न ... आज जब तुम ऑफिस से आ जाओगे न तब उसको ले जाना अपने साथ।"-अनुजा ने अपनी बात समाप्त की और सुमन को याचक की तरह देखने लगी। जैसे उसका स्वामी उसकी इच्छा को पूरी कर देगा फिर एक विश्वास के साथ बालकनी के बाहर देखने लगी। सुमन एक बार फिर नाकामयाबी के समुन्द्र में डूब गए और प्रयास का दामन पकड़ने की कोशिश करने लगे। आज रविवार है पर क्या अनुजा को समझा सकते थे...। उन्होने हामी की ध्वनि धीरे से अनुजा के कानों में कही और जाने के लिए तैयार होने लगे।

अनुजा जिसके आँसू न जाने कहाँ खो गए थे और पर उसने अपनी एक दुनिया बसा ली थी जिसमे वो और प्रयास थे पर सुमन... अनुजा की झूठी दुनिया के दुख से बचने के लिए रविवार को पार्क चले जाया करते थे... ताकि अनुजा का प्रयास जिंदा रहे और सुमन प्रयास के लिए उसकी माँ को ठीक करने का प्रयास कर सके। अनुजा बालकनी से बाहर देखने लगी शायद प्रयास के लिए फिर से सोच रही थी.... सुमन थके कदमों से एक लंबी यात्रा की तैयारी करने के लिए घर से बाहर आ गए।

वो नहीं जानते थे की उन्हे क्या करना है बस वो इतना जानते थे अनुजा को जिंदा रखना है.. प्रयास के लिए, एक बार फिर से.....।

मुझे मंजूर है

प्रेम एक ऐसा अहसास है जिसे शब्दों में पिरोना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यह आत्मा की अनुभूति के पल होते है न की शारीरिक अहसासों के।

मैंने इस प्रेम की अनुभूति को स्वयं महसूस किया है और अपने आस पास हो रही प्रेमालाप की सुंदर आभा को भी देखा है।

यह बात लगभग दस साल पहले की है। शादी का रंगीन माहौल था। चारों ओर उत्साह, नए खुशियों की महक और एक मदमस्त करने वाली रौनक फ़िजाओं में फैली हुई थी। मेहंदी की रस्म चल रही थी। ऋतु के हाथ पर जैसे उसके भाग्य की रेखाएं मेहंदी वाली बना रही थी। ऋतु के चेहरे पर आज अलग ही रौनक थी। तभी किसी ने उसकी आँखे पीछे से बंद कर दी। अचानक से अँधेरा छा जाने से पहले तो ऋतु थोड़ा असहज हो गई पर जैसे ही किसी ने उसके कानों में कहा–'कैसी है मेरी गुलाबो..... पहचानो तो कौन आया है।'

ऋतु के चेहरे पर एक हँसी की लहर दौड़ गई उसने भी गर्मजोशी से कहा–'ये गुलाबों तो किसी और की हो गई मेरी परी....।' जोर की खिलखिलाहटों के बीच दोनों ने एक दूसरे को गले लगा लिया।

परी जो ऋतु की दोस्त थी और अपनी सहेली की शादी के लिए आई थी। सच में दोस्ती का प्रेम भी बहुत ही अनोखा होता है। दोनों दोस्त कुछ समय बाद जुदा भी हो जायेंगे, पर एक दूसरे की खुशियों को दुगुना करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ रही थी।

तभी ऋतु की माँ ने परी को देख लिया और उसे गले लगाते हुए कहा– 'बहुत अच्छा किया तुमने.. सफर कैसा रहा.. थक गई होंगी। बंसी ..बंसी (ऋतु की माँ ने घर की नौकरानी को आवाज़ लगाते हुए कहा) परी के लिए नाश्ता लेकर आओ और उनका सामान भी ऋतु के कमरे में ही रख देना। दोनों सहेलियाँ शादी तक साथ ही रहे, तो अच्छा है, फिर तो ऋतु विदा हो जायगी।' कहते-कहते ऋतु की माँ की आँखों में आँसू आ गए।

परी ने समय की नाजाकत को समझते हुए बात को संभाल लिया और ऋतु के गले में हाथ डालकर बोली–'आंटी अब आप चिंता मत कीजिए। ऋतु की सारी जिम्मदारी मेरी रही।'

ऋतु की माँ दोनों को प्यार करके शादी के अन्य कामो में व्यस्त हो गई। उनके जाते ही परी ने ऋतु को हल्की सी च्युटी काटते हुए कहा – 'क्या बात है गुलाबो.. लगता हैं बहुत जल्दी थी तुझे शादी की... कम से कम छुट्टियों वाले दिन करती। तेरे लिए ओवर टाइम में सारा काम निबटा कर आई हूँ।'

ऋतु ने भी थोड़ा रोमांटिक होते हुए कहा– 'तीन साल से डेट कर रहे थे, बस फिर एक दिन लगा अब एक दूसरे के बिना नहीं रह पायंगे... दूरी बर्दाश्त नहीं हो रही थी यार.. बस घरवालों को बताया और झटपट शादी की तैयारी शुरू।'

ऋतु ने परी की ओर शरारत भरी मुस्कान भरते हुए कहा –'अब तू भी हाथों में मेहंदी लगवा ले,.. शादी का मजा ही अलग है... सुनो जरा मेरी सहेली के हाथ में भी मेहंदी लगा देना (ऋतु ने मेहंदी वाली की ओर देखकर कहा।)

परी जैसे इसके लिए तैयार थी उसने भी शरारत भरे अंदाज में कहा– 'नहीं जी ! मुझे अभी कोई मजा नहीं लेना है। अभी तो आजादी का मजा ही लेना है।' दोनों सहेलियाँ एक दूसरे को छेड़ रही थी। ऋतु के हाथ में मेहंदी भी लग चुकी थी। परी ऋतु को लेकर थोड़ी देर आराम करने के बहाने से कमरे में ले गई।

ऋतु ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा– 'सुन मेरा एक फ्रेंड शादी में आने वाला है, तू कहे तो तुम दोनों का इंट्रोडक्शन करवा दूँ।'

परी जो अबतक तकिये का सहारा लेकर बैठ चुकी थी ने थोड़ा लेटते हुए कहा–' गुलाबों मुझे बक्श दे। तू अपनी शादी एन्जॉय कर।"

'वही तो कर रही हूँ। तेरी भी बात बन जाए, तो शादी का मजा दुगुना हो जाएगा।'

'अच्छा बता कौन है ? क्या करता है ?'

'मेरे साथ ही काम करता है। सुयश का दोस्त है, देखने में बहुत ही हेंडसम है।

'देख अभी तू शादी कर ,मेरा कोई इरादा है।'

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई बाहर माँ थी। परी ने दरवाजा खोला। ऋतु की माँ दोनों के लिए नाश्ता लेकर आई थी। दोनों को आराम करने के लिए कह और आगे का प्रोग्राम बताकर वो बेटी को नजरभर देखकर चली गई।

रातभर बातें, नाच-गाना, हँसी का दौर चला। अगली सुबह हल्दी हाथ की रस्म का था, पर शायद परी के लिए भी कुछ खास होनेवाला था। रस्म की सारी तैयारी कर दी गई थी। ऋतु हल्दी लगवाने बैठ गई तभी चार-पांच नौजवानों की टोली धड़धडाती हुई ऋतु के पास पहुँच गई और गाने गाने लगी। ऋतु के बाकि दोस्त भी आ गए थे। उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। परी अचानक से आए लोगों को देख थोड़ा सा पीछे की ओर चली गई। ऋतु ने परी की और देखकर एक लड़के की और इशारा कर दिया। परी ने ऋतु को घूर कर देखा। यह सब चल ही रह था कि ऋतु के आए दोस्तों ने तो हल्दी हाथ को होली में बदल दिया। अचानक से लगा शादी वाले घर में नया जोश आ गया था। दोस्तो ने कौन-सा ऐसा रिश्तेदार नहीं था जिसे पीले रंग में न रंगा हो।

पीछे खड़ी परी इस नज़ारे को देखकर आनंद ले रही थी, तभी उस टोली में से एक ने हल्दी हाथों में भर ली और परी की ओर आया परी थोड़ा सकपका गई पर उस नवयुवक ने बड़ी शालीनता से कहा– 'घबराइए नहीं मैं.. आपसे पूछकर ही आपको हल्दी लगाऊंगा।'

परी शरारत से पूछे गए सवाल के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। वो थोड़ा झेप सी गई।

'मुझे पसंद नहीं है।'

'पसंद तो मुझे भी नहीं है, पर शादी के लिए तो जरूरी है न।'

"क्या मतलब है आपका।' परी ने तुनकते हुए कहा।

'कुछ नहीं ..मेरा नाम अनुज हैं और आपका।"

'परी।'

"वाह ! कौन से परिस्तान की परी है आप ?'

'जी ...'

'मैं तो मजाक कर रहा हूँ।क्यों न शादी तक हम दोस्ती कर ले और शादी की मस्ती का आनंद ले।'

'नहीं ,मुझे ज्यादा मस्ती पसंद नहीं है।'इस बार परी ने जवाब दिया पर थोड़ा सख्ती से जिसे अनुज समझ गया।तबतक ऋतु ने परी को आवाज़ दे दी परी उसके पास चली गई।

शाम को सभी शादी की बाकी रस्मों के लिए होटल की ओर रवाना हो गए। परी और ऋतु ब्यूटी पार्लर चली गई। दुल्हन जैसे ही मंडप पर पहुँची सब दुल्हन को देखकर तो हैरान थे ही, पर आज परी भी गजब ढा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो धरती पर चाँद उतर गया हो। आज शायद परी की जिंदगी में कुछ अनोखा होने वाला था। परी ने अनुज का दिल एक ही नजर में चुरा लिया था। अनुज परी पर से अपनी आँखे हटा ही नहीं पा रहा था। बस अनुज ने ठान लिया वो परी से दोस्ती करके ही रहेगा। पर परी उसको कोई भाव नहीं दे रही थी। अनुज ने भी हार नहीं मानी थी। वो पूरी शादी में परी के आगे-पीछे घूमता रहा। अनुज बस एक बार परी की सहमति चाहता था। पूरी शादी में अनुज परी के आस-पास ही रहा इस बात से परी अनजान नहीं थी। उसने कई बार अनुज को कनखियों से देखा था। अनुज को भी इस बात का अहसास हो गया था।

शादी की सारी रस्में हो चुकी थी।फेरे भी हो गए थे।

तभी ऋतु की माँ ने कहा–'परी ऋतु को लेकर तुम घर चली जाओ कल सुबह ही विदाई है। थोड़ी देर आराम कर लेगी। मनोज तुमको घर छोड़ देगा।'

परी ऋतु को सँभालते हुए आगे बड़ी ही थी की उसे अनुज की आवाज़ सुनाई दी–'आंटी मैं भी घर जाना चाहता हूँ। थोड़ा आराम कर लूँगा।'

'हाँ! हाँ!, तुम ऐसा करो ऋतु के साथ ही चले जाओ।'

अनुज की तो मन मांगी मुराद पूरी हो गई, पर परी के चेहरे पर खीज के भाव आ गए थे।

चारों गाड़ी में बैठ गए। मनोज ने ड्राइविंग सीट संभाल ली अनुज साथ वाली सीट पर बैठ गया। पीछे ऋतु और परी बैठ गई। गाड़ी सड़क पर दौड़ने लगी।

तभी अनुज ने कहा –'ऋतु शादी करके कैसा लग रहा हैं।'

'ऐसा लग रहा हैं जैसे में दूसरी दुनिया में हूँ अमेजिंग यार ! '

'तो फिर अपनी सहेली को भी कहो वो भी ऐसा अनुभव कर सकती है मैं तो तैयार हूँ।'

'नो थैंक्स .'.परी ने नाराज होते हुए कहा।

'मैडम हमारे जैसा आपको कहीं नहीं मिलेगा मंजूर हो तो अभी हाँ कहिए वरना बाद में पछताना पडेगा।'

'अरे! अजीब जबरदस्ती है... मैं आपको जानती भी नहीं और आप है की गले ही पड़े जा रहे हैं।'

'तो लगा क्यों नहीं लेती गले....'हँसी के ठहाको के साथ ऋतु ने भी परी को छेड़ना शुरू कर दिया।

'आज तो वैसे भी वेलेन्टाइन का दिन है।'-मनोज ने भी मस्करी करते हुए कहा।

'हमने तो अपनी वेलेन्टाइन ढूंढ ली है... 'अनुज ने पीछे पलट कर परी की और देखकर कहा।

'कौन है वो...' परी ने जोर से खीजते और चीखते हुए कहा।

'पहले आप दोस्ती के लिए हाँ बोलो.. बोलो मंजूर है।' अनुज ने परी की आँखों में झांकते हुए कहा।

'नहीं...' परी ने बेरुखी से इनकार कर दिया।

तभी अचानक गाडी की गति बिगड़ गई ऐसा लगा गाड़ी रफ्तार से सड़क से हटकर कही ओर जा रही है। अनुज चिल्लाया-' मनोज गाड़ी संभाल... स्पीड कम कर।'

पीछे परी और ऋतु के तो जैसे होश ही उड़ गए थे। दोनों सुन्न पड़ गई थी और तभी एक जोरदार टकराहट हुई, ऐसा लगा जैसे कोई चट्टान टूट कर गिर गई हो।

कार का आगे का हिस्सा पेड़ से जा टकराया था। मनोज का मुँह सीधा स्टारिंग से जा टकराया। अनुज को पीछे की और झटका लगा।पीछे की सीट का दरवाजा जोर की आवाज के साथ खुला और कुछ धम्म से गिरने की आवाज़ आई। एक दर्दनाक चीख के साथ ऋतु चिल्लाई –'परी.....।'

कार में से धुआं निकलने लगा। कार एक पेड़ का सहारा लेकर रुक गई। अनुज घबरा गया उसने पीछे देखा ऋतु अपनी सीट पर ही थी उसने चैन की सांस ली। मनोज को भी ज्यादा चोट नहीं आई थी, पर परी... परी किधर है।

सड़क पर भीड़ लग चुकी थी। आने-जाने वाले लोग मदद के लिए दौड़ पड़े थे। थोड़ी देर में पुलिस भी आ गई हादसे की सूचना शादी वाले घर में पहुंचा दी गई थी। पन्द्रह मिनट में ही सब कुछ बदल गया।

परी की हालत नाजुक थी। शरीर का कोई अंग ऐसा नहीं था जिसमे चोट न लगी हो। सर पर गहरी चोट आई थी। परी के परिवारजन को सूचना दे दी गई थी।

अस्पताल में अफरा-तफरी मची हुई थी। सारे रिश्तेदार पहुँच गए थे।

परी को तुरंत आपरेशन के लिए ले जाया गया। बाकियों को मामूली चोट आई थी उनकी मरहम पट्टी कर दी गई थी। सभी घबराए हुए और खामोश थे। सुबह तक सबको इन्तजार करना पड़ा। परी के माँ बाप भी आ गए थे। ऋतु को उसके माँ-पिता ले गए। उसका रोरोकर बुरा हाल था।

डाक्टर ने परी का आपरेशन कर दिया था और बाहर आकर बताया यदि तीन दिन में होश नहीं आया तो परी का बचना मुश्किल है। ख़ुशी का माहोल गम में बदल चुका था।

अभी एक दिन ही बीता था कि अचानक परी को रक्तस्राव होने लगा तुरंत आपरेशन के लिए ले जाया गया। एक और बुरी खबर मिली परी के यूट्रस में चोट लग गई थी। शायद अब वो कभी माँ नहीं बन सकेगी। इस खबर ने परी के माता-पिता का हिला कर रख दिया। उनके लिए सदमों से ज्यादा जरूरी था परी का बचना। तीन दिन आँखों में ही कट गई थी। तीसरे दिन परी ने हल्की सी दर्द भरी सिसकी ली। तब सबने राहत की सास ली। परी के बचने की उम्मीद जाग गई थी।

एक महीना परी अस्पताल में ही रही। सबकी मौजूदगी का अहसास परी को हो रहा था पर एक व्यक्ति की मौजूदगी उसकी आँखों में बार-बार पानी भर रही थी।

धीरे से परी ने कहा-' अनुज तुम ....'

'हाँ! मैं ..क्यों क्या हुआ ?'

'तुम घर नहीं गए।' परी ने अनुज को देखते हुए कहा।

'नहीं ,परी यह एक महीने से घर नहीं गया है। इसी ने तुम्हें बचाया है। सड़क से उठाकर अस्पताल पंहुचाया, तुमको खून दिया, यहाँ तक की एक महीने से तुम्हारी देखभाल में हमारी मदद कर रहा है। भगवन इसकी सब इच्छाएँ पूरी करे।'-परी की माँ ने कमरे के भीतर आते हुए कहा।

अनुज ने परी की ओर देखा और मुस्कुरा दिया।

'पर अनुज ...'परी के चेहरे पर एक सवाल सा उभर गया।

'परी अभी भी तुम जानना चाहती हो मेरी वैलेन्टाईन कौन है।' अनुज ने परी की आँखों में देखते हुए कहा।

'अनुज ..'परी की आवाज भर्रा गई।

परी की माँ ने आश्चर्य से अनुज को देखा और कहा–'अनुज तुम सब जानते हो न परी अब कभी .....।'

बस आंटी आगे कुछ मत कहिए मैं सिर्फ परी को चाहता हूँ। यह रहा मेरे मम्मी पापा का नम्बर, वो मेरी पसंद को जानते है और शुगुन लेकर बैठे हैं। अगर आप और परी तैयार हैं तो आप लोग शादी के लिए दिन निकाल ले।

'परी तुम्हें मंजूर हैं।' अनुज जैसे समय नहीं गवाना चाहता था। उसने परी की आँखों में देखते हुए कहा।

'हाँ मंजूर है।'-परी ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही कहा और उसकी सिसकियाँ बंध गई। अनुज ने उसे बाँहों में भर लिया और अपने प्रेम की निशानी परी के माथे पर दे दी।

माँ दोनों को इस पवित्र प्यार के अहसास के साथ छोड़ कर कमरे से बाहर आ गई और अपनी भर आई आँखों को पोछने लगी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- *ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु'*
जन्मतिथि	- 22 जनवरी 1975, दिल्ली
माता-पिता	- श्रीमती सरोज जखमोला -श्री विध्या दत्त जखमोला
पति	- श्री सुबोध थपलियाल
मूल निवासी	- देहरादून, उत्तराखंड
वर्तमान पता	- दिल्ली पब्लिक स्कूल, गांधीधाम, गुजरात/देहरादून, उत्तराखण्ड
शिक्षा	- एम.ए., बी.एड.,प्राणिक हीलर
पद	- हिन्दी शिक्षिका (विभागाध्यक्ष) व लेखिका
मो.नं.	- 8142123421, 9581116688
ई मेल	- rituth@gmail.com - http://sudevastu.blogspot.in
प्रकाशन	- कविता संग्रह (दो वर्षो से समाचार पत्र स्वतंत्र वार्ता में प्रकाशित), अलकनंदा पत्रिका में आलेख, कविताएं प्रकाशित, अंतराष्ट्रीय पत्रिका प्रयास से लेख व कवितायें, काव्य स्पंदन से प्रकाशित कविताएं, काव्य अमर उजाला से कविताएं प्रकाशित, वेब पत्रिकाओं से कविताएं प्रकाशित, प्रतिलिपि से छः कहानियाँ और एक लेख प्रकाशित रिश्तों के अंकुर साझा संकलन से कहानियाँ प्रकाशित, अंतरा शब्द समुह से 'मुक्त परिंदे' लघुकथा प्रकाशित।
सम्मान	1. डेली मिलाप समाचार पत्र हैदराबाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ कविता का सम्मान 2017। 2. हिन्दी सागर- हिन्दी सेवी सम्मान, शिल्पी सम्मान, शीर्षक परिषद से 3 बार दैनिक श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, सर्वश्रेष्ठ कहानीकार सम्मान 2018। 3. हिंदी सागर द्वारा काव्य श्री सम्मान और शब्द शिल्पी सम्मान। 4. साहित्य संगम द्वारा दो बार श्रेष्ठ रचनाकार और श्रेष्ठ टिप्पणी कार सम्मान। 5. संगम नारी सुवास द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान। 6. शीर्षक साहित्य परिषद द्वारा दैनिक श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान (तीन बार)। 7. वर्तमान अंकुर द्वारा कथा गौरव सम्मान। 8. आगाज समूह द्वारा दैनिक श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान। 9. अंतरा शब्द शक्ति व वुमन आवाज द्वारा 'वुमन आवाज सम्मान' 2018
संबद्धता	- रामी समाज सेवी संस्था की सदस्या (दिल्ली)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-75-9
मूल्य- 55/-